Sylvia Plath's "Daddy" Translated into Hindi

Smita Agarwal

डैडी

तुम पूरे नहीं पड़ते, तुम पूरे नहीं पड़ते
अब, काले जूते,
जिसमें मैं रही हूँ, एक पैर की तरह,
तीस साल तक, निरीह, सफेद,
नाम के वास्ते साँस लेती, और, छींकने से भी डरती।

डैडी, मुझे तुम्हारा क़त्ल करना पड़ा।
तुम समय से पहले ही चल बसे–
संगमरमर से भारी, एक झोला ईश्वर से भरा,
भद्दी मूर्ति, जिसके एक पैर का अंगूठा
प्रिस्को की सील मच्छली जैसा बड़ा है,

और एक सर, सनकी एटलानटिक में है,
जहाँ मूसलाधार बारिश होती है, नीले पर हरी।
ख़ूबसूरत नौसेट के आसपास के पानी में
मैं तुम्हें दोबारा पाने की दुआ करती थी
आख़ डू.....

जर्मन भाषा में, पोलैण्ड के एक शहर में–
जो धिस–धिस कर चपटा हो गया
जंग, जंग, जंग के भारी बेलन से–
उस शहर का मामुली सा नाम है,
मेरा पोलैक दोस्त

कहता है, इस नाम के एक–आध दर्जन शहर हैं,
इसलिये, मैं कभी नहीं बता सकी, तुमने कहाँ
अपना पैर रखा, अपनी जड़ कहाँ बिछाई,
मैं तुमसे कभी बात नहीं कर पाई।
ज़ुबान जबड़े से चिपक गई.....

फँस गई, कंटीले फन्दे में.....
इख़, इख़, इख़, इख़,
मैं मुश्किल से बोल पाती,
सोचती, हर–इक जर्मन तुम थे
और वह भाषा, अश्लील।

एक इंजन, एक इंजन,
छुक–छुक करता, मुझे ले चलता,
यहूदी की तरह,
डाकाओ, आऊशवित्स, बेलज़न।
मैं यहूदी की तरह बात करने लगी.....
मैं सोचती हूँ, शायद मैं यहूदी ही हूँ।

टाइरौल की बर्फ, वियना की बियर,
न तो बहुत स्वच्छ न सच्चे हैं।
मेरी गिप्सी पुरखिन, मेरी अजीब क़िस्मत,
और मेरा टैरो का गड्डा, टैरो का गड्डा,
शायद में थोडी बहुत यहूदी ही हूँ.....

मैं हमेशा तुमसे डरी–
तुम्हारी लुफ़्तवाफ़ह, तुम्हारी ऊल–जलूल,
तुम्हारी सुव्यवस्थित मूँछ,
तुम्हारी आर्यन आँख, चमकीली, नीली,
पैन्ज़र–पुरूष, पैन्ज़र–पूरूष, ओ तुम–

ईश्वर नहीं, एक स्वस्तिक हो।
इतने काले कि आसमान उस पार झलक न सके।
हर औरत एक फ़ासिष्ट को पूजती है,
चाहती है, अपने मुँह पर जूता, और, कठोर दिल,
तुम जैसे वहशी का.....

ब्लैकबोर्ड के सामने तुम खड़े हो डैडी,
इस तस्वीर में, जो मेरे पास है,
ठुड्डी में दरार, न कि तुम्हारे पैर में,
किसी शैतान से कम नहीं,
ना उस काले आदमी से, जिसने

मेरे भोले–भाले दिल के दो टुकड़े किये।
मैं दस साल की थी जब उन्होंने मुझे दफ़नाया।
बीस पर, मैंने मरने की कोशिश की.....
तुम्हारे पास, तुम्हारे पास, पहुँचने की।
मुझे लगा, तुम्हारी हड्डियाँ ही काफी होंगी।

पर मुझे बोरे से निकाल लिया गया,
गोंद से जोड़ दिया गया,
और तब मैंने जाना कि मुझे क्या करना है।
मैंने तुम्हारा एक पुतला बनाया–
काले कपड़ों में एक पुरूष, उसकी आँखों में
मायनकाम्फ़ की चमक,

उसके दिल में दूसरों को तड़पाने की इच्छा।
और मैं बोली– मैं तैयार हूँ, तैयार हूँ।
इसलिये डैडी, अब तो मैं बस निपट ही चुकी।
काले फोन का तार कट चुका है,
आवाज़ें रेंग–रेंग कर मुझ तक पहुँच ही नहीं सकतीं।

अगर मैंने एक क़त्ल किया, तो दूसरा करूँगी–
वह दरिन्दा जो कहता था कि वह तुम था,
और जिसने मेरा ख़ून चूसा, एक साल तक,
सात साल तक, अगर तुम जानना ही चाहते हो।
डैडी, अब आराम से लेट जाओ।

तुम्हारे काले दिल में एक नश्तर है.....
और गाँववालों ने तुम्हें कभी नहीं चाहा.....
वे तुमपर नाच रहे हैं, तुम्हें कुचल रहे हैं,
उन्हें हमेशा से *पता* था, वह ज़ालिम तुम हो।
डैडी, डैडी, हरामी, मैं तुमसे निपट गई।

– सिलव्या प्लैथ

TRANSLATED INTO HINDI BY SMITA AGARWAL